International Journal of Applied Research 2016; 2(9): 690-691

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(9): 690-691
www.allresearchjournal.com
Received: 05-07-2016
Accepted: 06-08-2016

डॉ. गजाला शाहीन
एम.ए., पी–एच.डी. (इतिहास) –
अ.प्र. सिंह वि.वि. रीवा,
मध्य प्रदेश, भारत।

Correspondence
डॉ. गजाला शाहीन
एम.ए., पी–एच.डी. (इतिहास) –
अ.प्र. सिंह वि.वि. रीवा,
मध्य प्रदेश, भारत।

विभिन्न धर्मो का सांस्कृतिक उत्थान गुर्गी में गाजी मिया का मजार

डॉ. गजाला शाहीन

सारांश
गुर्गी स्थान एक महान सांस्कृतिक, धार्मिक और अध्यात्मिक स्थान के रूप में हमारे समक्ष अपनी महिमा एवं महत्वतता का प्रदर्शन करता है। यहाँ हिन्दू धर्म के शैव संतो और महात्माओं, बौद्धो और जैनों के अतिरिक्त सूफी सम्प्रदाय के हजरत सैय्यद साल्गर मसऊद गाजी मियाँ का मजार शरीफ है जिससे इस स्थान की महिमा में चार चाँद लग जाते है। हमारी राष्ट्रीय एकता का प्रतिनिधित्व करने वाला ये स्थान महान इतिहासिक स्थल है। यहाँ से इन समस्त धर्मों के अनुयायियों को अपने भूतकाल की यादगार के दर्शन होते है, और वो अपनी अतीत की सान की कल्पना में खो जाते है और एक असीमित आंनन्द का अनुभव करते हैं।

मूलशब्द: धर्म, संस्कृति, गुर्गी एवं गाजी मिया का मजार

प्रस्तावना
गुर्गी–महसांव (हुजूर) एक ऐतिहासिक महत्व का बहुत ही प्राचीन स्थान है। रीवा से 12 मील पूर्व 24^0 30^0 उत्तरी और 81^0 22^0 पूर्व में यह स्थित है। इसके आस–पास दूर तक अपने प्राचीन गृहों, गढ़ियों और महलों के भग्नावशेष है, इससे इस स्थान का प्राचीन महत्व सूचित होता है।[1]
हिन्दू धर्म में तीन प्रमुख धर्म है शैव, वैष्णव, शाक्त। ऐसे बघेलखण्ड की सभ्यता, संस्कृति में विभिन्न धार्मिक परम्पराओं और विचार धाराओं का योग है उनका प्रभाव विविध रूपों में मिलता है।
यहाँ के हिन्दुओं का सनातन धर्म चिरकाल तक शैव रहा है। प्राचीन शासक नाग, भार शिव और वाकाटको के आराध्य देवता शंकर थे। परवर्ती युग तक यह परम्परा चलती रही है।[2] गोरगी के शैवाचार्य प्रभाव शिव का शिष्य प्रशांतशिव भी एक अच्छा वस्तु प्रणेता था। प्रशांतशिव के निर्देशन में गोरगी ही नहीं वरन अन्य शैव पीठों का निर्माण भी हुआ होगा। उसमे सोन के किनारे चन्द्रेह व गंगा नदी के किनारे वाराणसी में शैवमठो और भ्रमसेन तथा कांतित में आश्रमों में आश्रमों व तपस्थली का निर्माण करवाया, जहाँ तप साधना की जाती थी।[3]
इस क्षेत्र में वैष्णव धर्म का भी प्रसार हुआ था। महाराजा जयसिंह से लेकर आज तक यह परम्परा प्रसिद्ध है। रीवा नरेश के राजगुरू, लक्ष्मण बाग के मठाधीश प्रारंभ से ही वैष्णव माता वलम्बी रहे हैं। अधिकांश वैष्णव राम की भी पूजा करते हैं और कृष्ण जी का महत्व कृष्ण जन्माष्टमी के समय ही रहता है।[4]
इस प्रकार हम देखते है कि उस क्षेत्र में विभिन्न धर्मों, सभ्यता व संस्कृति का कितना अच्छा प्रभाव रहा हैं। भारत वर्ष में हिन्दू धर्म में सुधार करने वाले दो सम्प्रदाय हुये एक जैन दूसरे बौद्ध यहाँ पर उसें दोनों प्रकार की मूर्तियाँ मिली है।
श्रीमति मधुलिका वाजपेयी ने अपने ऐतिहासिक ग्रन्थ मध्यप्रदेश मे जैन धर्म का विकास में गुर्गी से प्रापत पार्श्वनाथ मूर्ति वा नवीं शतीं की एक कात्योसर्त्ग मूर्मि रीवा के समीप गुर्गी नामक स्थान से मिली है और इलाहाबाद संग्रहालय में सुरक्षित है।[5]
गुर्गी में बौद्धों के समय की सुप्रसिद्ध कोशाम्बी नगरी यही पर बसी थी यहाँ रेहुटा नाम का एक अच्छा दुर्ग है और वह चेदि वंशी राजा करन (1042–1122) का बनवाया हुआ कहाँ जाता है। इसका घेरा कोई ढ़ाई मील का है।[6]
प्रसिद्ध पुरातत्व महान मेजर सर एलक्जेण्डर कनीघंम डॉरेक्टर जनरल आरकॉलेजिकल डिपाटमेंट आयु गौरमिंट ऑयु इण्डिया में रीवा राज्य के बहुत से प्राचीन यादगार स्थानों की खोज की ओर इसका वर्णन किया जो वस्तुयें प्राचीन सभ्यता और संस्कृति पर रीवा राज्य पर प्रकाश डालती है।[7]
इस ऐतिहासिक स्थान गुर्गी में सूफी संत गाजी मियाँ का एक मजार भी हैं जहाँ उर्स (मेला) हर साल लगता है। यहाँ श्रद्धालू लोग इकट्ठा होते है और बाबा की दरगाह में श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हैं।

जिया अली खाँ अशरफी ने अपनी पुस्तक में गाजी मियां के बारे में लिखा है कि–

सैय्यद साल्गर मसऊद गाजी नाम था। गाजी मियाँ, सालार गाजी, बाला पीर, हटीला पीर, बदायूँ वाले आपकों वाले मियाँ कहते है। उनके पिता का शुभ नाम साल्गर साहू था। सुल्तान महमूद गजनवी की वहन के पुत्र थें। उनका सिलसिला नसव का 12 वास्तों से हजरत अली तक मिल जाता है उनका पैत्रिक देश गजनी था। किन्तु उनका जन्म अजमेर में हुआ था इस प्रकार वो भारतीय माने जायेगें।

तपस्या और आध्यात्मिक जप–तप में समय का अधिकतर भाग गुजारते थे। किन्तु समय के वातावरण ने उनको सिद्ध करने की थी प्रेरणा मिली और बचपन से ही युद्ध कला की ओर आकर्षित हो गये। वो सत्य और न्याय के लिए धर्म युद्ध को आवश्यक मानते थे। महमूद गजनवी के देहांत के पश्चात् 15 वर्ष की अवस्था में बदायूँ एक बड़ी फौज लेकर आये थे। बदायूँ से आगे भ्रमण करते हुये अन्य स्थानों में पहुंचे और वहाँ से बहराइच आ गये। जहाँ आपकों शहीद कर दिया गया। आपका मजार बहराइच नगर से लगभग तीन किलो मीटर दूर उत्तर की ओर है। आपकी दरगाह का भवन बहुत भव्य और पक्का बना हुआ है। 14 रज्जव को हर साल दानदार उसे होता है।[8]

सूफी संतो के श्रद्धालुओं में एक परम्परा रही है कि वो महान पुरूषों के यहाँ की ईट बगैरा लाकर अपने स्थानीय आवादी में स्थापित करते है और उसकों उस महा पुरूष संत के नाम से मशहूर कर देते है। श्रद्धा की दृष्टि से ऐसा करना अनुचित भी नहीं लगता किन्तु ऐतिहासिक तथ्य अपना सही अैर सच्चा स्वरूप खो देते है। उस व्यक्ति की शिक्षायें, व्यक्तिगत जीवनी, अंधकार में डूब जाती है। आवश्यकता हे कि ऐतिहासिक तथ्यों को प्रकाश में लाया जाये और इन महापुरूषों की करनी और कथनी का लाभ उठाया जाये और उनके उच्च चरित्र का अनुसरण किया जाये।

गाजी मियाँ का मजार गुर्गी में बना हुआ है। जहाँ अर्सा दराज से उर्स व मेला हुआ करता है किन्तु वहाँ के श्रद्धालु लोगों से जब मैने गाजी मियाँ के व्यक्तित्व एवं जीवन संम्बन्धी प्रश्न किये तो उनका उत्तर संतोषप्रद नहीं रहा वो इतना ही बता पाये कि कोई सूफी संत यहाँ थे। और यही उनका देहांत हुआ और ये मजार उन्हीं का है उनसे सम्बंधित कोई घटना नहीं बताई गयी किस काल में थे उनका उत्तर भी मौर रहकर दिया गया। इस स्थान पर मजार बनने का कारण क्या था, क्या सचमुच वो यहाँ मृत्यु को प्राप्त हुये थे ये सारे प्रश्न मेरे मस्तिष्क में उत्पन्न हो रहे थे। किन्तु एक का भी उत्तर न मिला। अंत में क्षेत्रीय कार्य से आकर मैने पुस्तकों में उनके सम्बंध में जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया। गुर्गी में सालार मसऊद गाजी मियाँ का उर्स मुबारक 25 मई को हर साल बड़े धूम–धाम से मनाया जाता है। उस दरगाह शरीफ की देखभाल मोहम्मद हनीफ अंसारी करते है और गुर्गी के सभी लोग इसमें शामिल होते है जिसमें हिन्दू–मुस्लिम सभी धर्म के लोग भी शामिल होते है। चादर और फूलों की डाली चढ़ाते है।[9] उसी के दिन यहाँ रातभर कब्बाली होती है। इस रोजा–अकदश में रीवा के सभी व्यक्ति तो शामिल होते ही है बघेलखण्ड के अन्य स्थानों से लोग पहुँचकर बाबा की दरगाह शरीफ में श्रद्धा सुमन अर्पित करते है।

इस लेखन का लक्ष्य लेखिका कार्य भी के मेरी त्रुटियों को सुधारने का कष्ट विद्दुत गण करे, और जो सुधार करने योगा अभिमत हो उसे लेखिका को अवगत कराने की दया करें।

गुर्गी में गाजी मिया की मजार मौजूद है जहाँ रीवा के लोग मेला लगाया करते थे और अब भी वहाँ का उर्स होता है, चिराग बत्ती किया करते है। हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी की असली मजार बहराइच शरीफ में है।

सन्दर्भ

1. जीतन सिंह, रीवा राज्य का दर्पण पृ. 394 प्रकाशन– पं. रघुनाथ सहाय पाठक द्वारा यूनियन प्रेस प्रयाग में मुद्रित और रीवा दरबार द्वारा प्रकाशित।
2. डॉ. हीरा लाल शुक्ल, बघेलखण्ड की संस्कृति और भाषा, पृ. 90।
3. प्रो. राधेशरण, विंध्य क्षेत्र का इतिहास पृ–264, प्रकाशन–मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी रवीन्द्र नाथ ठाकुर मार्ग : बानगंगा भोपाल (म.प्र.)।
4. श्रीमती मधुलिका बाजपेयी, मध्य प्रदेश में जैन धर्म का विकास पृ. 127।
5. जीतन सिंह, रीवा राज्य दर्पण, पृ. 395।
6. के.एम. सक्सेना, रीवा स्टेट डायरेक्ट्री, पृ. 59।
7. जिया अली खाँ अशरफी, किताब मरदाने खुदा, पृ. 58–60।
8. महबूब खाँ साहब (बिछिया) साक्षात्कार द्वारा, दिनांक 08.01. 2009।